



SRI ARVIND MAHILA COLLEGE, PATNA

Accredited by NAAC with B Grade

A Constituent Unit of Patliputra University, Patna



Shatrughna Prasad was a proponent of discipline in both life and literature – Awadhesh Narayan Singh

Seminar on the historical novel 'Takhte Taus' and a lecture on 'Acharya Bhartrihari and his Vakyapadiyam'

July 12, Patna.

"Imagination is essential for a writer. Shatrughna Prasad was a proponent of discipline in both life and literature. I always strive to uphold that discipline in my own life." These remarks were made by Awadhesh Narayan Singh, Chairman of the Bihar Legislative Council, during the fourth event of a lecture series organized jointly by the Acharya Shatrughna Prasad Research Institute, Patna, and Sri Aurobindo Mahila College, Patna. Held at the auditorium of Sri Aurobindo Mahila College in Patna, the program featured discussions across two sessions: one on Shatrughna Prasad's novel 'Takhte Taus' and another on 'Acharya Bhartrihari and his Vakyapadiyam'. In the inaugural session, Mr. Singh reminisced about the time spent with Acharya-ji, noting his constant concern for society and the nation. He highlighted key themes from the novel, such as the forced religious conversions perpetrated by Mughal invaders and the character assassination of women. He remarked that Shatrughna Prasad wanted the present generation to learn—through his writing—about the inhumane aspects of past history, a price our ancestors paid by risking their very lives. During the session, the college principal, Prof. Rekha Rani, honored the guests with *Angavastrams* (ceremonial stoles) and a symbol of Maharshi Aurobindo; in her welcome address, she stated that organizing a national seminar on the literary work of such a distinguished figure was a matter of pride for the college.

The keynote speaker for the first session, Prof. Sadanand Gupta—former Chairman of the Uttar Pradesh Hindi Sansthan and former Professor at Pandit Deendayal Upadhyaya Gorakhpur University—presented an in-depth analysis of the narrative of the novel 'Takhte Taus'. He stated, "Shatrughna Prasad propagated the national ethos through his creative writing. He aspired to view history in its continuity. In his historical novels, he emerges as a writer who deeply loves his land and culture. His novel *Takhte Taus* presents the history of the Aurangzeb era,

depicting the Satnami sect, Shivaji, and India's tradition of struggle; the novel remains relevant today in its fundamental objectives." Prof. Rajendra Prasad Gupta, Deputy Leader of the ruling party in the Bihar Legislative Council, presided over this session. He remarked that Shatrughna Prasad's creative work was driven by a commitment to national unity—a theme that remains pertinent today. He drew a parallel between Adi Guru Shankaracharya, who established *Peethas* (monastic seats) in four corners of the country to safeguard the Sanatan tradition, and Shatrughna Prasad, who wove the entire nation together by incorporating narratives from places like Nalanda, Kashmir, Ujjayini, Punjab, Shravasti, and Rajasthan into his novels.

At the beginning of the first session, Prof. Anita, Chairperson of the Acharya Shatrughna Research Institute, introduced the theme of the event.

During this session, four research scholars—Vivek Tripathi (Raja Shankar Shah University, Chhindwara, Madhya Pradesh), Saurabh Morale (University of Delhi), Chandan Kumar Paswan (Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga), and Pradeep Kumar Awasthi (Jayaprakash Narayan University, Chhapra)—who are conducting research on Acharya Shatrughna Prasad's novels at various universities across the country, were honored with the 'Acharya Shatrughna Prasad Rachna-Samman' (Literary Award). They were presented with a citation, a memento, and an *Angavastram* (ceremonial stole). All four also briefly presented their views focusing on Shatrughna Prasad's literary works. Additionally, Dr. Ashok Kumar Jyoti, Assistant Professor in the Department of Hindi at Banaras Hindu University, presented a comparative study of the personalities and writings of Acharya Bhartrihari and Acharya Shatrughna Prasad, while also highlighting the distinctive features of the latter's historical perspective. The session was graced by the distinguished presence of renowned physician Prof. Vijayendra Kumar. Dr. Ajay Kumar moderated the session, while Dr. Arun Kumar proposed the vote of thanks.

The theme of the second session was 'Acharya Bhartrihari and his *Vakyapadiyam*'. In his keynote address, senior litterateur and retired IAS officer Ranendra Kumar remarked that Bhartrihari's *Vakyapadiyam* is a seminal work in the philosophy of language, noting that it has had a profound influence abroad. Serving as the main speaker, Prof. Rajneesh Kumar Mishra—Professor and Dean of the Department of Sanskrit at Jawaharlal Nehru University, New Delhi—stated that Bhartrihari played a pivotal role in laying the groundwork

for global discourse on the philosophy of language. As early as the 5th century, Bhartrihari demonstrated to the world that language is the primary medium of thought. There is a deep interconnection between knowledge, language, and power; indeed, power is constructed through language. Prof. Mishra noted that Acharya Bhartrihari established the intrinsic relationship between *Shabda* (the Word) and *Brahma* (the Ultimate Reality) in the very first *Karika* (verse) of the *Vakyapadiyam*. In her presidential address, Prof. Rekha Rani, Principal of Sri Arvind Mahila College, described Acharya Bhartrihari as a profound scholar who enriched Sanskrit grammar; she observed that he offered fresh perspectives by re-establishing the significance of the alphabet. His insights remain relevant for today's generation...





आचार्य शतुघ्न प्रसाद शोध संस्थान एवं श्री अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

आचार्य शतुघ्न प्रसाद स्मृति व्याख्यानमाला-4

उद्घाटन एवं संगोष्ठी-सत्र

विषय : 'तुखे ताऊस'-आचार्य जी के ऐतिहासिक उपन्यास पर चर्चा

मुख्य अतिथि श्री अवधेश नारायण सिंह राज्यापति, बिहार विद्यान परिषद्	मुख्य वक्ता प्रो. सदानन्द गुप्त पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, बनारस पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विज्ञान, भारतपुर विश्वविद्यालय, भारतपुर	अध्यक्षता प्रो.(डॉ.) राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता उपनिता, रामारण्य वन, बिहार विद्यान परिषद्
---	--	---

व्याख्यानमाला-सत्र

विषय : 'आचार्य भर्तृहरि और उनका वाक्यपदीयम्'

बीज वक्ता श्री रणेन्द्र सुप्रसिद्ध साहित्यकार भा.प्र.ले.(सेवानिवृत्त), राँची	मुख्य वक्ता प्रो. रजनीश कुमार मिश्र आचार्य एवं संकायाध्यक्ष संस्कृत विभाग, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
---	--

स्थान : श्री अरविन्द महिला कॉलेज, काजीपुर, पटना-800004

दिनांक : 12 जुलाई, 2026 समय : 9:30 बजे पूर्वाह्न से 2:30 बजे अपराह्न

इस अवसर पर आपकी गरिमामयी उपस्थिति साग्रह प्रार्थित है।

निवेदक

प्रो. अनीता
अध्यक्ष
आचार्य शतुघ्न प्रसाद शोध संस्थान, पटना

प्रो. रेखा रानी
प्राचार्य
श्री अरविन्द महिला कॉलेज, पटना





शत्रुघ्न प्रसाद जीवन और साहित्य दोनों में अनुशासन के पैरोकार थे : अवधेश नारायण सिंह

नवबिहार टाइम्स संवाददाता

पटना। साहित्यकार के लिए कल्पना-शक्ति होना अति आवश्यक होता है। शत्रुघ्न प्रसाद जीवन और साहित्य दोनों में अनुशासन के पैरोकार थे। मैं अपने जीवन में उनके अनुशासन को हमेशा निभाने का प्रयास करता हूँ। ये बातें आचार्य शत्रुघ्न प्रसाद शोध संस्थान, पटना एवं श्री अरविंद महिला कॉलेज, पटना के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित व्याख्यानमाला की चौथी शृंखला के कार्यक्रम में बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहीं। यह कार्यक्रम पटना स्थित श्री अरविंद महिला कॉलेज के सभागार में आयोजित की गई जिसमें शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यास 'तख्ते ताऊस' और 'आचार्य भर्तृहरि और उनका वाक्यपदीयम' विषयक दो सत्रों में



विमर्श हुआ। उद्घाटन सत्र में श्री सिंह ने आचार्य जी के साथ बीते दिनों को याद किया। उन्होंने बताया कि कैसे वे हमेशा समाज और राष्ट्र के लिए चिंतित रहते थे। उन्होंने उपन्यास के केंद्र-बिंदु विषय मुगल आक्रांताओं द्वारा देश में बलात् धर्म-परिवर्तन करना और महिलाओं के चरित्र-हनन जैसे मुद्दों को प्रमुखता से रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि शत्रुघ्न प्रसाद चाहते थे कि उनकी लेखनी से वर्तमान पीढ़ी विगत इतिहास के उन

अमानवीय पक्ष को जाने, जिसकी कीमत हमारे पूर्वजों ने जान पर बाजी लगाकर चुकाई। इस सत्र में कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रेखा रानी ने अतिथियों को अंगवस्त्रम और महर्षि अरविंद का प्रतीक-चिह्न देकर सम्मानित करते हुए अपने स्वागत भाषण में कहा कि ऐसे महान विभूति के साहित्यिक कर्म पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन महाविद्यालय के लिए गर्व का विषय है।

आज, पटना, 13/07/2026

अनुशासन के पैरोकार थे शत्रुघ्न प्रसाद : सभापति

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। साहित्यकार के लिए कल्पना-शक्ति होना अति आवश्यक होता है। शत्रुघ्न प्रसाद जीवन और साहित्य दोनों में अनुशासन के पैरोकार थे।

ये बातें बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहीं। वे रविवार को आचार्य शत्रुघ्न प्रसाद शोध संस्थान एवं श्री अरविंद महिला कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित व्याख्यानमाला की चौथी शृंखला के कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन श्री अरविंद महिला कॉलेज के सभागार में किया गया था।

श्री सिंह ने कहा कि शत्रुघ्न प्रसाद चाहते थे कि उनकी लेखनी से वर्तमान पीढ़ी विगत इतिहास के उन अमानवीय पक्ष को जाने, जिसकी कीमत हमारे पूर्वजों ने जान पर बाजी लगाकर चुकाई। कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रेखा रानी ने अतिथियों को अंगवस्त्रम और महर्षि अरविंद का प्रतीक-चिह्न देकर सम्मानित किया।

प्रथम सत्र के मुख्य वक्ता उत्तर

प्रदेश हिन्दी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष व पंडित दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य प्रो. सदानंद गुप्त ने शत्रुघ्न प्रसाद के 'तख्ते ताऊस' उपन्यास की कथावस्तु पर विशद विमर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने



कहा कि शत्रुघ्न प्रसाद ने अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से राष्ट्रीय स्वत्व का प्रसार किया है। वे इतिहास को उसकी निरंतरता में देखने के आकांक्षी थे। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए बिहार विधान परिषद् में सत्तारूढ़ दल के उपनेता प्रो. राजेन्द्र

प्रसाद गुप्ता ने कहा कि शत्रुघ्न प्रसाद ने राष्ट्रीय एकता को ध्यान में रखकर रचनाधर्मिता की है, जो आज भी हमारे लिए प्रासंगिक है। आचार्य शत्रुघ्न शोध संस्थान की अध्यक्ष प्रो. अनीता ने विषय-प्रवर्तन किया। द्वितीय सत्र में

नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य एवं संकायाध्यक्ष प्रो. रजनीश कुमार मिश्र ने कहा कि पूरी दुनिया के भाषाचिंतन की पृष्ठभूमि तैयार करने में भर्तृहरि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रेखा रानी ने कहा कि आचार्य भर्तृहरि संस्कृत व्याकरण को समृद्ध करनेवाले विद्वान शास्त्रज्ञ थे।

उन्होंने वर्णमाला की विशेषताओं को पुनः स्थापित करते हुए नवीन चिंतन दिया। उनका चिंतन आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण कुमार भगत थे।

शत्रुघ्न प्रसाद शोध संस्थान के महासचिव डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि कार्यक्रम में बिहार के कई विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक, शोधार्थी और साहित्यकारों ने भाग लिया। इस सत्र का संचालन डॉ. आशा कुमारी ने जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रशांत ने किया। डॉ. प्रिया कुमारी ने पूरे आयोजन का सफल संयोजन किया।

'आचार्य भर्तृहरि और उनका वाक्यपदीयम' पर वरिष्ठ साहित्यकार और भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी रणेन्द्र कुमार ने कहा कि यह भाषाचिंतन की महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसका विदेशों पर गहरा प्रभाव पड़ा। मुख्य वक्ता जवाहरलाल

शत्रुघ्न प्रसाद जीवन में अनुशासन के रहे पैरोकार



अरविन्द महिला कॉलेज में आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन करते बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह, प्रो. सदानंद गुप्त एवं अन्य। • सी: आर्यजक।

व्याख्यान

जागरण संवाददाता, पटना : बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि साहित्यकार के लिए कल्पनाशक्ति का होना अति आवश्यक होता है। शत्रुघ्न प्रसाद जीवन और साहित्य दोनों में अनुशासन के पैरोकार थे।

उन्होंने ये बातें आचार्य शत्रुघ्न प्रसाद शोध संस्थान, पटना एवं श्री अरविन्द महिला कॉलेज, पटना के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित व्याख्यान में कहीं। यह कार्यक्रम श्री अरविन्द महिला कॉलेज के सभागार में आयोजित किया गया। वहीं

शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यास 'तख्ते ताऊस' और 'आचार्य भर्तृहरि और उनका वाक्यपदीयम्' विषयक दो सत्रों में विमर्श हुआ। उद्घाटन सत्र में अवधेश नारायण सिंह ने आचार्य जी के साथ बीते दिनों को याद किया। उन्होंने कहा कि शत्रुघ्न प्रसाद चाहते थे कि उनकी लेखनी से वर्तमान पीढ़ी विगत इतिहास के उन अमानवीय पक्ष को जाने, जिसकी कीमत हमारे पूर्वजों ने जान पर बाजी लगाकर चुकाई। कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रेखा रानी ने अतिथियों को अंगवस्त्र और महर्षि अरविंद का प्रतीक-चिह्न देकर सम्मानित किया।

शत्रुघ्न प्रसाद जीवन और साहित्य दोनों में अनुशासन के पैरोकार थे – अवधेश नारायण सिंह

संवाददाता। एजुकेशन न्यूज

पटना। शत्रुघ्न प्रसाद जीवन और साहित्य दोनों में अनुशासन के पैरोकार थे। मैं अपने जीवन में उनके अनुशासन को हमेशा निभाने का प्रयास करता हूँ। ये बातें आचार्य शत्रुघ्न प्रसाद शोध संस्थान, पटना एवं श्री अरविन्द महिला कॉलेज, पटना के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहीं। यह कार्यक्रम आचार्य शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यास 'तख्ते ताऊस' और 'आचार्य भर्तृहरि और उनका वाक्यपदीयम्' विषय पर था। श्री सिंह ने बताया कि शत्रुघ्न बाबू कैसे हमेशा समाज और राष्ट्र के लिए चिंतित रहते थे। उन्होंने उपन्यास के केंद्र-बिंदु विषय मुगल आक्रांताओं द्वारा देश में बलात् धर्म-परिवर्तन करना और महिलाओं के चरित्र-हनन जैसे मुद्दों को प्रमुखता से रेखांकित किया। इस सत्र में कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रेखा रानी ने अतिथियों को अंगवस्त्र और महर्षि अरविंद



का प्रतीक-चिह्न देकर सम्मानित करते हुए अपने स्वागत भाषण में कहा कि ऐसे महान विभूति के साहित्यिक कर्म पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन महाविद्यालय के लिए गर्व का विषय है।

प्रथम सत्र के मुख्य वक्ता उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष प्रो. सदानंद गुप्त ने 'तख्ते ताऊस' उपन्यास के संदर्भ में कहा कि शत्रुघ्न प्रसाद ने अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से राष्ट्रीय स्वत्व का प्रसार किया है। वे इतिहास को उसकी निरंतरता में देखने के आकांक्षी थे। अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में वे अपनी धरती और अपनी संस्कृति से प्रेम करनेवाले लेखक के रूप में

दिखाई देते हैं। उनके उपन्यास 'तख्ते ताऊस' और गजब के समय के इतिहास को प्रस्तुत करता है, जिसमें सतनामी संप्रदायों, शिवाजी और भारत की संघर्षशील परंपरा का चित्रण किया है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में बिहार विधान परिषद् में सत्तारूढ़ दल के उपनेता प्रो. राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता ने कहा कि जिस प्रकार आदिगुरु शंकराचार्य ने सनातन परंपरा की संरक्षा के लिए देश के चार भागों में पीठों की स्थापना की, उसी प्रकार शत्रुघ्न प्रसाद ने नालंदा, कश्मीर, उज्जयनी, पंजाब, श्रावस्ती, राजस्थान आदि स्थलों के कथानकों को अपने उपन्यासों में स्थान देकर पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में

पिरोया है। इस सत्र में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में शत्रुघ्न बाबू पर शोध कार्य कर रहे चार शोधार्थियों को 'आचार्य शत्रुघ्न प्रसाद रचना-सम्मान' से सम्मानित भी किया गया।

द्वितीय सत्र का विषय था – 'आचार्य भर्तृहरि और उनका वाक्यपदीयम्'। अपने बीज वक्तव्य में प्रसिद्ध साहित्यकार रणेन्द्र ने कहा कि 'भर्तृहरि का वाक्यपदीयम्' भाषाचिंतन की महत्वपूर्ण पुस्तक है। इस पुस्तक का विदेशों पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में जेएनयू के प्रो. रजनीश कुमार मिश्र ने कहा कि पूरी दुनिया के भाषाचिंतन की पृष्ठभूमि तैयार करने

में भर्तृहरि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चिंतन का प्राथमिक माध्यम भाषा है, यह बात भर्तृहरि ने पूरी दुनिया को 5वीं शताब्दी में ही बताई। ज्ञान, भाषा और सत्ता का आपस में गहरा संबंध है। सत्ता को भाषा ने निर्मित किया है। प्रो. मिश्र ने कहा कि आचार्य भर्तृहरि ने 'वाक्यपदीयम्' की पहली कारिका में ही शब्द और ब्रह्म के अंतः संबंध को स्थापित कर दिया था।

इस सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य में प्राचार्या प्रो. रेखा रानी ने कहा कि आचार्य भर्तृहरि संस्कृत व्याकरण को समृद्ध करनेवाले विद्वान् शास्त्रज्ञ थे। उन्होंने वर्णमाला की विशेषताओं को स्थापित करते हुए नवीन चिंतन दिया। इस सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण कुमार भगत ने भी अपने विचार रखे। डॉ. प्रिया कुमारी ने पूरे आयोजन का सफल संयोजन किया। इस संगोष्ठी में बिहार के कई विश्वविद्यालयों के शिक्षकों और शोधार्थियों ने भाग लिया।